पशुचारक पासपोर्ट

सत्यमेव जयते
NATIONAL RAINFED AREA AUTHORITY

FAO
FIAT PANIS

सत्यमेव जयते
Government of Rajasthan

URMUL TRUST

विषय सूची

- सामान्य जानकारी 4
- पशु चारा 6
- राजस्थान में भेड़ और बकरियों की मुख्य नस्लें 10
- भेड़-बकरियों की प्रमुख बीमारियां, लक्षण व बचाव 18
- भारत व राजस्थान सरकार की पशुओं के लिये योजनाएं 28
- पलायन के समय ले जाने वाली अनिवार्य वस्तुओं की सूची 36
- जानवरों की बिक्री की जानकारी (पलायन के अन्त में) 40
- परियोजना का परिचय 44
- आपातकालीन नम्बर 46

सामान्य जानकारी

नाम .....

पिता का नाम .....

गांव .....

पंचायत समिति .....

खण्ड .....

जिला .....

राज्य .....

फोन नम्बर .....

पारिवारिक व्यक्ति का नाम एवं मोबाईल नम्बर (कम से कम दो सदस्यों के) .....

.....

आपातकालीन नम्बर .....

रक्त समूह .....

आधार कार्ड नम्बर .....

अन्य कोई पहचान कार्ड .....

जन्म तिथि .....

पलायन के रास्ते मुख्य गांव/खण्ड .....

पशु टीकाकरण की स्थिति .....

पशुपालक का स्वास्थ्य बीमा .....

पशुओं का स्वास्थ्य बीमा .....

बीमारियों की पहचान .....

पशुओं की संख्या .....

नर - ..... मादा - .....

भेड़ ..... भेड़ .....

बकरियां ..... बकरियां .....

ऊंट ..... ऊंट .....

पशु चारा

भेड़ और बकरियां लगभग सभी प्रकार की वनस्पति खा सकती है। ये पेड़ों की पत्तियों से लेकर घास तक चरती है। बकरियों में रेशेदार चारे को पचाने की क्षमता अधिक होती है। बकरियां फोग, आक, बेर, बबुल, गुलर, खेजड़ी, नीम व बोरड़ी आदि की पत्तियां खाना अधिक पसन्द करती है। वैसे बकरी और भेड़ रिजका, बरसीम की पत्तियां व हाथी घास को भी बड़े चाव से खाती है। बकरियां अपने शारीरिक भार का 3–3.5 प्रतिशत शुष्क पदार्थ खा जाती है। बकरियों को उत्पादन क्षमता एवं शारीरिक वृद्धि के लिये शुष्क पदार्थ के अतिरिक्त मिश्रण में दाना निम्न प्रकार के तत्व होने चाहियेः

दाना मिश्रण (प्रतिशत)	
चना	15
जौ-मक्का	37
मुंगफली या खल	25
गेंहू का चोकर	20
खनिज लवण	2.5
साधारण लवण	0.5

उम्र/माह मात्रा प्रतिदिन	
छोटे मेमने का (4 माह से कम उम्र वाले)	100–200 ग्राम
4 माह से ग्याभिन होने तक	200–300 ग्राम
दूध देने वाली बकरी को	400–500 ग्राम
ग्याभिन/सूखी बकरी	300–400 ग्राम
बीजू बकरा	500–700 ग्राम

नोट्स

नोट्स

नोट्स

राजस्थान में भेड़ और बकरियों की मुख्य नस्लें

भेड़ की मुख्य नस्लें

1. चोकला नस्ल

चोकला नस्ल की भेड़ राजस्थान के बीकानेर, जैसलमेर, नागौर, चुरू, झुंझुनू और सीकर आदि जिलों में पायी जाती है। इसका चेहरा भूरे रंग का और गर्दन गुलाबी रंग की होती है, जिन पर बाल न के बराबर होते हैं। इससे मिलने वाला ऊन खासतौर पर गलीचा एवं दरी बनाने के काम आता है। 6 महीने की उम्र में इसका औसत वनज 24 किग्रा होता है।

2. जैसलमेरी नस्ल

जैसलमेरी नस्ल की भेड़ राजस्थान के जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर आदि जिलों में पायी जाती है। इसकी शुद्ध नस्ल जैसलमेर के दक्षिणी-पश्चिमी इलाकों में पाई जाती है। इस मजबूत बनावट की भेड़ के चेहरे का रंग काला या भूरे होता है। लम्बे झुलते हुए कानों वाली इस नस्ल की भेड़ों में सींग नहीं पाई जाती है। इसके ऊन का रंग सफेद होता है।

3. खेरी नस्ल

खेरी नस्ल की भेड़ों को पशुपालकों का मित्र माना गया है। यह अक्सर पलायन के खास मार्गों पर देखने को मिलती है और चरवाहों के झुंड में सबसे ज्यादा दिखाई देती है। इसकी बनावट रेगिस्तान के लम्बे रास्तो पर चलने के लिये आदर्शपूर्ण है। इस नस्ल की भेड़ कम चारे की उपलब्धता

और अत्यधिक गर्मी में भी जीवित रहने में सक्षम है। इसकी प्रजनन क्षमता भी काफी अच्छी है।

4. मगरा नस्ल

बीकानेर, जैसलमेर, चुरू और नागौर जिलों में पायी जाने वाली मगरा नस्ल की भेड़ें मध्यम से बड़े आकार की होती है। गुलाबी रंग के चमड़ी, सफेद रंग पर भूरे धब्बों वाला चेहरा और सींग का न होना इस नस्ल की प्रमुख पहचान है। इससे प्राप्त ऊन हल्का और सफेद रंग का होता है। 12 महीने की उम्र तक इसका औसत वजन लगभग 28 किग्रा. तक होता है। इसके रोयें की अधिकतम लम्बाई 6 सेंटीमीटर तक होती है।

5. नाली नस्ल

नाली नस्ल की भेड़ राजस्थान के श्रीगंगानगर, चुरू और झुंझुनू के साथ-साथ दक्षिणी हरियाणा में भी पायी जाती है। मध्यम कद की बनावट, उजले भूरे रंग का चेहरा और गुलाबी रंग के चमड़ी इसकी प्रमुख पहचान है। इस प्रजाति की भेड़ों के सींग नहीं होते हैं। इसके पूरे शरीर में, माथे से लेकर गर्दन, पेट और पैरों तक में ऊंन पाया जाता है। इस नस्ल की पलायन न करने वाली एक वर्ष की भेड़ का औसत वजन 19 किग्रा तक होता है। इसके रोयें की लम्बाई 6.79 सेंटीमीटर तक होती है।

6. पुगल नस्ल

पुगल नस्ल की भेड़ राजस्थान के बीकानेर और जैसलमेर जिले में पायी जाती है। इसकी आंखों के ऊपर दोनों तरफ छोटी, हल्के काले रंग की

धारियां होती है और निचला जबड़ा आमतौर पर हल्के भूरे रंग का होता है। इसकी पूंछ मध्यम आकार की और पतली होती है। कान छोटे आकार के होते हैं। एक वर्ष की भेड़ का औसत वजन 26 किग्रा. तक होता है। इसका ऊन सफेद रंग की होता है और रोयें की लम्बाई 4.9 सेंटीमीटर तक होती है।

7. मालपुरा नस्ल

मालपुरा नस्ल की भेड़ राजस्थान के जयपुर, टोंक, भीलवाड़ा, बूंदी, अजमेर व सवाई माधोपुर जिले में पायी जाती है। इस नस्ल की भेड़ लम्बे पैरों वाली और हल्के भूरे रंग की होती है। इसकी पूंछ मध्यम से लम्बी आकार की और पतली होती है। इसके कान छोटे होते हैं। इससे प्राप्त ऊन सफेद रंग का और बेहद मोटे रोयें वाला होता हैं एक वर्ष की भेड़ का औसत वजन 24 किग्रा. तक होता है। इसके रोयें की लम्बाई 4.9 सेंटीमीटर तक होती है।

बकरी की मुख्य नस्लें

राजस्थान में मुख्य रूप से सिरोही, मारवाड़ी व जखराना नस्ल की बकरियां पाई जाती है।

1. सिरोही नस्ल

यह नस्ल राजस्थान में अरावली पर्वतमालाओं के आस-पास के क्षेत्र में तथा सिरोही, अजमेर, नागौर, टोंक, राजसमन्द एवं उदयपुर जिलों में

मुख्य रूप से पाई जाती है। इस नस्ल की बकरी का पालन मुख्यतः मांस एवं दुध के लिये किया जाता है। इस नस्ल की बकरी का आकार मध्यम एवं शरीर गठीला होता है। इसके शरीर का रंग हल्का एवं गहरा भूरा होता है और शरीर पर काले, सफेद एवं गहरे काले रंग के धब्बे होते हैं। कुछ बकरियों में गले के नीचे अंगुली जैसी दो गूलरे (मांसल भाग) एवं मुंह के जबड़े के नीचे की तरफ दाढ़ीनुमा बाल पाये जाते हैं। इनकी पूंछ छोटी एवं ऊपर की तरफ उठी हुई होती है। प्रजनन योग्य नर का औसतन भार 40–50 व मादा का भार 23–27 किलोग्राम होता है। इस नस्ल की बकरियों में दुध उत्पादन की क्षमता 71 किग्रा (115 दिनों में) तक होती है। इस नस्ल की बकरियां प्रायः एक बार में 2 बच्चों को जन्म देती है।

2. मारवाड़ी नस्ल

यह नस्ल राजस्थान के जोधपुर, पाली, नागौर, बीकानेर, जालौर, जैसलमेर व बाड़मेर जिले में पाई जाती है। इस नस्ल की बकरी मध्यम आकार और काले रंग की होती है। इसका शरीर लम्बे बालों से ढका होता है। इसके कान चपटे, मध्यम आकार और नीचे की ओर लटके हुए होते हैं। इस नस्ल के बकरों में घनी दाढ़ी पाई जाती है। इस नस्ल में नर का औसत भार 30–35 किलोग्राम व मादा का 25–30 किलोग्राम होता है। इसके शरीर से एक वर्ष में 200 ग्राम बाल प्राप्त होते हैं जो गलीचे, नमदा आदि बनाने के काम आते हैं। इस नस्ल की बकरियों में दूध उत्पादन की क्षमता 92 किग्रा (115 दिनों में) तक होती है। इस नस्ल में

रोग प्रतिरोधक क्षमता एवं सूखा सहन करने की क्षमता अन्य बकरियों की अपेक्षा अधिक होती है।

3. जखराना नस्ल

यह नस्ल राजस्थान के अलवर जिले एवं आस-पास के क्षेत्रों में पाई जाती है। यह आकार में बड़ी और काले रंग की होती है। इनके मुंह और कानों के पास सफेद रंग के धब्बे पाये जाते हैं। सिर के आगे का भाग संकरा और हल्का सा उभार लिये हुए होता है। इस नस्ल की बकरियों में दुध उत्पादन की क्षमता 122 किग्रा (115 दिनों में) तक होती है। इस नस्ल में वयस्क नर का औसत भार 55 किग्रा. और मादा का 45 किग्रा. होता है।

नोट्स

नोट्स

नोट्स

भेड़-बकरियों की प्रमुख

क्र.सं.	बीमारी का नाम	प्रभावित समूह	
1.	फिड़किया	गर्भवती पशु तथा बच्चा	• पेट में तेज दर्द होने • फड़किया रोग के बै का सुबह के समय • आंखे चौकन्नी नजर • उत्तेजना के कारण • अन्तिम अवस्था में
2.	पी.पी. आर (प्लेग)	4–12 महीने के बच्चे	• शुरूआती अवस्था • बाद की अवस्था में देता है, जिससे पशु • पशु को तेज बुखार • मुंह के किनारे छाले
3.	खुरपका- मुंहपका	सभी पशु	• मुंह, मसूड़े व जीभ • पैरों में खुरों के बी • पैर के छालों में ज • दुधारू पशुओं में दू
4.	गलघोंटू	सारे पशु	• 105–106 फॉरेनह • नाक, आंख एवं मुं • सांस लेते समय घुर • दम घुटने से पशु

बीमारियां, लक्षण व बचाव

बीमारी के लक्षण	टीके का नाम	पुनरावृति
के कारण पशु का बैचेन होकर उछलना कूदना। क्टीरिया से आंतों में जहर फैलने के कारण पशु मरा मिलना। आना और मुंह से झाग निकलना। शरीर का तापमान बढ़ जाना। पशु का लेटे-लेटे साइकिल की तरह पैर चलाना।	मल्टी कम्पोनेंट/ टाईप डी/ ईटी.	6 माह
में नाक में पानी बहना। गाढ़ा व मवाद युक्त होकर नाक को बन्द कर का मुंह खोलकर सांस लेना। का होना। एवं घाव।	टीसू कल्चर / रक्षा पीपीआर	3 वर्ष
पर छाले, लगातार लार का गिरना। च छाले जिससे पशु का लंगड़ाना। ख्म एवं कीड़े पड़ना। ध के उत्पादन में एकदम कमी।	गैलोनेक्स, पोली वेलेट	6 माह (सितम्बर एवं मार्च)
ाइट तक तेज बुखार। ह से तरल पदार्थ बहना। र्र-घुर्र की आवाज का होना। का मर जाना।	ऑयल एडजूमेंट	1 वर्ष (मानसून से पहले)

क्र.सं.	बीमारी का नाम	प्रभावित समूह	
5.	लंगड़िया बुखार	सारे पशुओं को (मानसून से पहले)	• 105–107 फॉरेनहाइ कर देना। • शरीर के विभिन्न अ • सूजन को दबाने प • पशु का पहले लंगड़ जाना।
6.	डायरिया	सारे पशु	• सांस लेने में परेशा • नाक, मुंह से तरल • बार-बार तरल मल • पशु का कमजोर हो
7.	आफरा	सारे पशु	• पशु का पेट बाएं त • सांस लेने में कठिन • पशु का बैचेन होना • पेट में तेज दर्द।
8.	टिटनेस	सारे पशु	• भोजन चबाने की प्र • मुंह से लार का गि • गर्दन का अकड़ जा • चेहरे एवं उदर की
9.	टीबी रोग	सारे पशु	• पशुओं तेज सांस ले • पशु का भार घटना • सूखी खांसी और स • पशु को बार-बार ब

बीमारी के लक्षण	टीके का नाम	पुनरावृति
ट तक तेज बुखार, खाना-पीना एवं जुगाली बंद अंगों में अकड़न, आंखों का लाल होना। र गैस भरी होने से चट-चट की आवाज का होना। ाना एवं चलने-फिरने में पूरी तरह असमर्थ हो	पोली वैलेट, फार्मल किल्ड	1 वर्ष
नी। पदार्थ का बहना। का होना। जाना।	सल्फाट्रीम	आवश्यकता होने पर
रफ से फूल जाना एवं पशु जुगाली बन्द कर देना। ाई होना। ।	सी.डी.सी., ऑक्सीटेट्रा साइक्लीन	आवश्यकता होने पर
क्रिया का धीमा हो जाना। रना। ना, पैरों का नहीं मुड़ना। मांसपेशियों में अकड़न उत्पन्न हो जाना।	टी.टी.	आवश्यकता होने पर
ेना। । ांस लेने में कठिनाई। बुखार आना।	बैलानाईल, मेलोनेक्स, ऐविल	1 वर्ष

क्र.सं.	बीमारी का नाम	प्रभावित समूह	
10.	रेबीज	सारे पशु	• पशु का सुस्त हो ज • पशु का घूम फिर • गतिवान वस्तुओं प • मुंह से अत्यधिक ल • निचले जबड़े का ल
11.	शीप व गोट पोक्स (माता)	सारे पशु	• शीप व गोट पोक्स • मुंह, नाक, थन एवं • पशु को खुजली हो • तेज बुखार।
12.	एंथ्रेक्स (ओरी)	सारे पशु	• शुरूआती लक्षण स • तेज बुखार का आ • गर्दन में सूजन एवं • पशुओं द्वारा चारा
13.	ब्रूसेल्लोसिस	मादा पशु	• ब्रूसेल्लोसिस में संक्र • तेज बुखार, सुस्ती, • गर्भपात के बाद जे बच्चेदानी में मवाद • पशु का देर से ग्या
14.	निमोनिया	सारे पशु	• नाक, आंख में पानी • सूखी खांसी और स • ठंडी व नमी वाले • पशुओं द्वारा चारा

बीमारी के लक्षण	टीके का नाम	पुनरावृति
ाना। नहीं पाना तथा तीन-चार दिन में पशु का मर जाना। र झपटना व काटने को दौड़ना। ार गिरना। टककर जीभ का बाहर निकल जाना।	रक्षा रेबीज का टीका	1 वर्ष
ं पिछली टांगों के बीच छालों का होना। ना।	आई.वी.आर. आई (गोट व शीप पोक्स)	1 वर्ष (दिसम्बर)
र्दी- जुकाम। ना। तेज सांस लेना। कम खाना।एंथ्रेक्स स्पोर१ वर्ष	एंथ्रेक्स स्पोर	1 वर्ष
मण के कारण मादा पशुओं में गर्भपात होना। बैचेनी व दूध में कमी। र (च्संबमदजं) का समय पर नहीं गिरने के कारण पड़ना। भिन होना	ब्रूसेला- अबोर्ट स्टेन-19	3–6 माह की आयु
ी आना। सांस लेने में कठिनाई। स्थान पर पशुओं का मर जाना। कम खाना।	टेरामाईसीन/ 20 लाख पी.पी.एफ./ सीसीपीपी	आवश्यकता अनुसार

नोट्स

नोट्स

नोट्स

नोट्स

योजना	संचालन	विवरण	लाभ प्राप्त कैसे करें
मुंहपका-खुरपका रोग नियंत्रण कार्यक्रम (राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण कार्यक्रम)	भारत सरकार	एफ.एम.डी. ज्यादा संक्रामक न हो इस उद्देश्य से मुंहपका एवं खुरपका रोग नियंत्रण कार्यक्रम का संचालन किया जा रहा है। इसके रोकथाम के लिये पशुपालन विभाग द्वारा शिविर लगाकर व नजदीकी पशु चिकित्सालय में निःशुल्क टीकाकरण किया जाता है	नजदीकी पशु चिकित्सालय से सम्पर्क करें।
भेड़ एवं बकरी पालन योजना	भारत सरकार	इस योजना के तहत भेड़ एवं बकरी पालन के विकास के लिये कृषक या गड़रिया जिसे भेड़ एवं बकरी पालन का समुचित एवं पारम्परिक अनुभव हो उसे ऋण और 50: और अधिकतम 50000 रू. की ब्याज मुक्त राशि उपलब्ध कराई जाती है। इस योजना में महिला, अनुसूचित जाति एवं जनजाति के पशुपालकों को प्राथमिकता दी गई है।	इस योजना के माध्यम से ऋण प्राप्त करने के लिये नाबार्ड एवं राज्य के सहकारी बैंक में आवेदन किया जा सकता है।
ब्रुसेलोसिस रोग नियंत्रण कार्यक्रम (राष्ट्रीय पशुरोग नियंत्रण कार्यक्रम)	भारत सरकार	इस योजना के तहत पशुओं में ब्रुसेला रोग को नियंत्रित करने के लिये पशुपालन विभाग द्वारा शिविर लगाकर व नजदीकी पशु चिकित्सालय में निःशुल्क टीकाकरण किया जाता है।	नजदीकी पशु चिकित्सालय से सम्पर्क करें।

की पशुओं के लिये योजनाएं

योजना	संचालन	विवरण	लाभ प्राप्त कैसे करें
महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम	भारत सरकार	महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम के तहत पशुपालकों को पशु शेड व जल कुण्ड निर्माण के लिये योजना का लाभ भी दिया जा रहा है।	ग्राम पंचायत से सम्पर्क कर मनरेगा के तहत पशुओं के लिये शेड एवं जलकुण्ड निर्माण का कार्य करवाया जा सकता है।
पेस्टेडेस पेट्टिस रूमिनेन्ट्स नियंत्रण कार्यक्रम (पशुधन स्वास्थ्य एवं रोग नियंत्रण कार्यक्रम)	भारत सरकार	पी.पी.आर. भेड़ बकरियों में होने वाला बेहत संक्रामक रोग है। इस कार्यक्रम के तहत भेड़ बकरियों का पशुपालन विभाग द्वारा शिविर लगाकर व नजदीकी पशु चिकित्सालय में नि:शुल्क टीकाकरण किया जाता है।	नजदीकी पशु चिकित्सालय से सम्पर्क करें।
भेड़ प्रजनन फार्म	राजस्थान सरकार	राजस्थान के फतेहपुर में स्थित फार्म में चोकला, नाली, मारवाड़ी नस्ल के नर मेमने के १ वर्ष के बच्चे को खरीदकर वैज्ञानिक तरीके पालन-पोषण करने के पश्चात अनुदानित दर पर भेड़पालकों को प्रजनन हेतु उपलब्ध कराया जाता है।	उन्नत नस्ल के मिढ़ों को प्राप्त करने के लिये पशुपालन विभाग या नजदीकी पशु चिकित्सालय से आवेदन करने के तरीके की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

योजना	संचालन	विवरण	लाभ प्राप्त कैसे करें
पशु मेले का आयोजन	राजस्थान सरकार	राजस्थान पशुधन विकास बोर्ड की ओर पशुपालकों को पशुओं का खरीद-बिक्री करने के लिये तथा उचित मूल्य दिलवाने के लिये प्रत्येक वर्ष में 10 राज्य स्तर के पशु मेलों का आयोजन किया जाता है। पशु मेले के आयोजन में पशुपालकों व पशुधन के लिये पानी, बिजली व चिकित्सा सुविधा निःशुल्क उपलब्ध कराई जाती है। इन मेलों के माध्यम से पशुपालकों को प्रति वर्ष 50–60 करोड़ रूपये की आय प्राप्त होती है।	मेलों के आयोजन की सूचना एवं मेले शामिल होने के लिये आवेदन करने की जानकारी पशुपालन विभाग के क्षेत्रीय पशु चिकित्सालय और पशुपालन विभाग बीकानेर से प्राप्त कर सकते हैं।
भामाशाह पशुधन बीमा योजना	राजस्थान सरकार	इस योजना के तहत भामाशाह कार्डधारक पशुपालक के देशी, संकर नस्ल के दूध देने वाले पशु गाय, भैंस, भार ढोने वाले ऊंट, घोड़ा, गधा, सांड, पाड़ा तथा अन्य पशु बकरी, भेड़ का बीमा अनुदानित प्रीमियम दर पर किया जायेगा। भेड़ का बीमा करवाने पर विभाग द्वारा एससी, एसटी एवं बीपीएल पशुपालकों को 80 प्रतिशत अनुदान एवं सामान्य वर्ग के पशुपालकों को 70 प्रतिशत अनुदान दिया जायेगा। इस योजना की प्रीमियम राशि 50 हजार रूपये है।	पशुपालकों को अपने पशुओं का बीमा करवाने के लिये संबंधित पशु चिकित्सालय में पशु बीमा के लिये सूचित करना होगा।

योजना	संचालन	विवरण	लाभ प्राप्त कैसे करें
सिरोही नस्ल बकरों का प्रजनन फार्म	राजस्थान सरकार	राजस्थान में नागौर, फतेहपुर व रामसर में सिरोही प्रजनन फार्म में उन्नत नस्ल के बकरों के 4–6 माह के बच्चे को खरीदकर वैज्ञानिक तरीके पालन-पोषण करने के बाद एससी, एसटी और बीपीएल परिवार के पशुपालकों को प्रजनन के लिये 1200 रू. की न्यूनतम दर पर बकरे को उपलब्ध कराया जाता है।	उन्नत नस्ल के बकरों को प्राप्त करने के लिये पशुपालन विभाग या नजदीकी पशु चिकित्सालय से आवेदन की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।
मुख्यमंत्री पशुधन निःशुल्क दवा योजना	राजस्थान सरकार	इस योजना के माध्यम से पशुपालन विभाग द्वारा शिविर लगाकर या नजदीकी पशु चिकित्सालय पर सभी प्रकार के पशुओं के लिये सभी प्रकार की दवाओं का निःशुल्क वितरण किया जाता है।	नजदीकी पशु चिकित्सालय से सम्पर्क करें।

नोट्स

नोट्स

नोट्स

नोट्स

पलायन के समय ले जाने वाली अनिवार्य वस्तुओं की सूची

1. खाना बनाने के बर्तन।
2. खाने का सामान।
3. आराम करने के लिये हल्का बिस्तर।
4. पानी भरने का बर्तन।
5. पशु व स्वयं के स्वास्थ्य के लिये प्राथमिक उपचार किट।
6. बैटरी टॉर्च।
7. मोबाईल फोन।
8. सामान ढोने के लिये गधा।
9. पंचायत से पलायन प्रमाण पत्र।
10. पहचान पत्र।
11. परिवार व अन्य जरूरी नम्बर की डायरी।

नोट्स

नोट्स

नोट्स

जानवरों की बिक्री की जानकारी (पलायन के अन्त में)

पलायन से लौटने की तारीख	पलायन के अंत में जानवरों की संख्या	पलायन के समय कितने जानवरों को बेचा ?	प्रति जानवर की कीमत		
			भेड़	बकरी	ऊंट

पलायन से लौटने की तारीख	पलायन के अंत में जानवरों की संख्या	पलायन के समय कितने जानवरों को बेचा ?	प्रति जानवर की कीमत		
			भेड़	बकरी	ऊंट

नोट्स

नोट्स

परियोजना का परिचय

संयुक्त राष्ट्र खाद्य एवं कृषि संगठन और राष्ट्रीय वर्षा सिंचित क्षेत्र प्राधिकरण, भारत सरकार की ओर से उरमूल ट्रस्ट द्वारा संचालित ''रेवायविंग ट्रेडिशनल पैस्चर रूट्स इन ड्राई सेमी ऐरिड पार्ट्स ऑफ द कंट्री'' परियोजना के माध्यम से चरवाहा समुदाय की समस्याओं के स्थायी प्रबंधन के साथ उनकी पारम्परिक गतिविधियों के संरक्षण को बढ़ावा दिया जायेगा।

इस कार्यक्रम के कार्यान्वयन में मुख्य रूप से तीन बिंदु लक्षित है पहला बुनियादी सेवाओं और बुनियादी ढांचे तक बेहतर पहुंच, दूसरा बेहतर पशुधन प्रबंधन को व्यापक रूप से अपनाने के लिये चरवाहा समुदाय की क्षमताओं को बढ़ाना और तीसरा चरवाहा समुदाय के लिये बेहतर नीति निर्माण के अनुकूल वातावरण बनाना।

इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये, उरमूल ट्रस्ट, तकनीकी विशेषज्ञ एजेंसियों, उरमूल नेटवर्क और अन्य कार्यक्रम टीमों द्वारा क्षेत्र में किये जा रहे कार्यों में आपसी सहयोग और समन्वय पर ध्यान दिया जायेगा।

नोट्स

आपातकालीन नम्बर

1.	पशुपालन विभाग, राजस्थान सरकार	0141–2743574
2.	रेवंत जयपाल, उरमूल	+91–8005608043
3.	राजस्थान पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर	1800–180–6224
4.	राजस्थान सरकार	181
5.	पुलिस	100
6.	स्वास्थ्य सेवाएं	108

नोट्स

नोट्स

नोट्स

नोट्स

नोट्स

उरमूल ट्रस्ट, उरमूल भवन,
रोडवेज़ बस स्टैण्ड के पास बीकानेर – 334001 राजस्थान
Tel: + 91 151 252 3093; e-mail: mail@urmul.org;
www.facebook.com/Urmul/